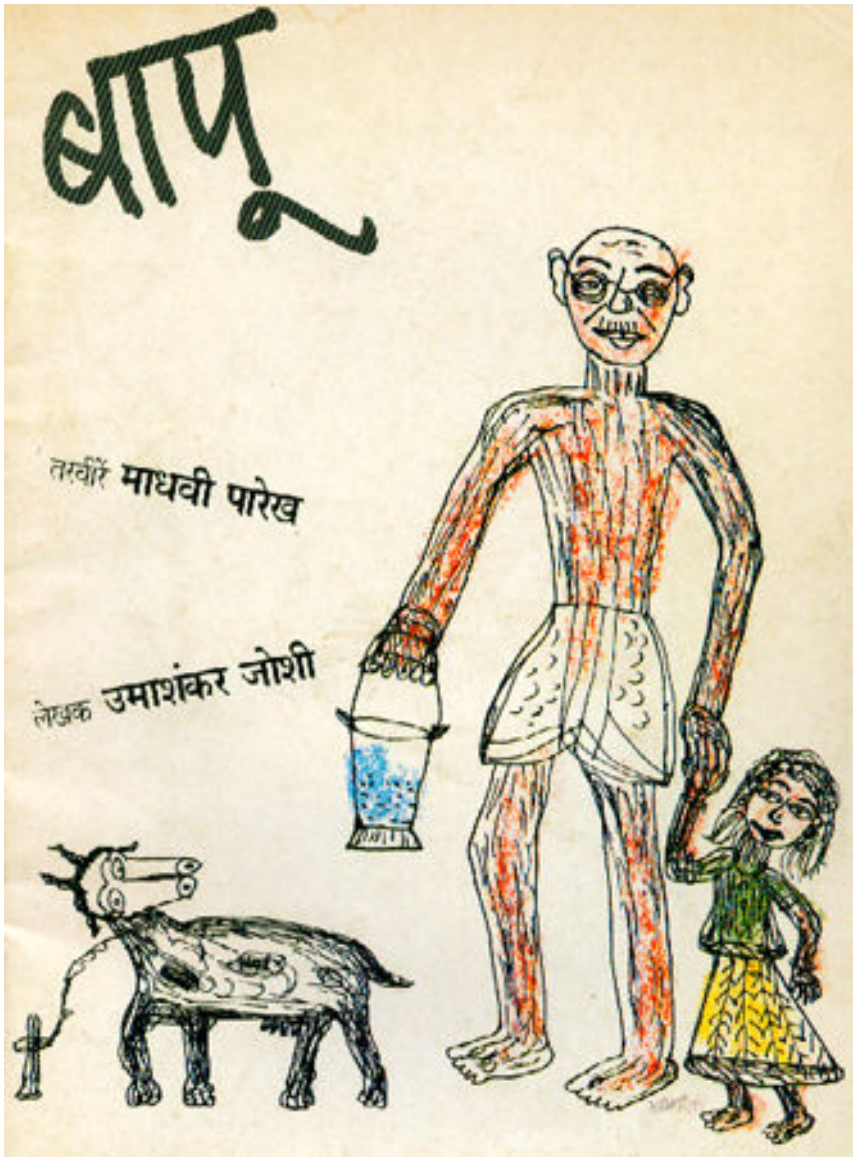

बापू

तस्वीरें: माधवी पारेख

लेखक: उमाशंकर जोशी

अनुवाद: वर्षा दास

प्रकाशक: सहमत

गांधीजी को जो कानून अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध लगते थे, उनका वे पूरे आत्मबल से विरोध करते थे। लेकिन जब वे जेल में होते थे तब, छोटे से छोटे कानून का भी दिल पालन करते थे।

दक्षिण अफ्रीका में उन्हें कड़ी मज़दूरी के कारावास की सज़ा मिली थी। दरवाज़े की सलाखों को रगड़कर साफ करने का काम, साढ़े तीन घंटे तक खड़े-खड़े करते थे। फर्श साफ करना, जमीन खोदना, सिलाई की मशीन से टोपी सीना, कंबल बुनना, इस प्रकार के कई काम करते थे। सिर्फ करते ही नहीं थे, पूरी उमंग से करते थे। कंबल बुनने का काम, बंद कोठरी में बैठकर करना पड़ता था। शाम तक कमर दुखने लग जाती थी। आंखों को भी तकलीफ होने लगी। लेकिन बाद में खुली हवा में बैठकर काम करने की अनुमति मिलने से, स्वास्थ्य अधिक बिगड़ने से बच गया।

एक बार एक मजेदार घटना घटी।

गांधीजी को सिलाई का या ऐसा ही कुछ काम सौंपा गया था। अधिकतर हिंदवासियों को, कंकड़ तोड़ने के काम पर लगाया जाता था। गांधीजी दरोगा से कहते थे कि उनको भी उसी काम पर लगाया जाय। लेकिन बड़े दरोगा ने हुकम दिया था कि गांधीजी को जेल से बाहर नहीं निकालना है। एक दिन गांधीजी के पास जो काम था वह पूरा हो गया तो वह पुस्तक पढ़ने लगे। लेकिन कैदी को तो, कोई न कोई काम करते रहना चाहिए। दरोगा ने पूछाः " आज आप बीमार हैं क्या?"

गांधीजी : " जी नहीं।"

दरोगाः " तो फिर आप काम क्यों नहीं करते?"

गांधीजीः " मेरे पास जो काम था वह सारा मैंने कर लिया। मैं काम का दिखावा करना नहीं चाहता। आप काम देंगे तो मैं खुशी से करूंगा। नहीं तो खाली पढ़ता रहूंगा। कुछ गलत तो नहीं कर रहा!"

दरोगाः " वह तो ठीक है, लेकिन जब बड़ा दरोगा या गवर्नर आए, तब आप का स्टोर में रहना ठीक होगा।"

गांधीजीः " मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं गवर्नर से भी कहूंगा कि यहां पर्याप्त काम नहीं है इसलिए, मुझे कंकड़ तोड़ने के लिए भेजा जाय।"

थोड़े दिन के बाद गवर्नर आए। गांधीजी ने उनको सारी बात बताई। गवर्नर ने कंकड़ तोड़ने के लिए बाहर जाने की अनुमति नहीं दी... और धीरे से कहाः " आपको उसकी जरूरत नहीं है क्यों कि, कल आपको दूसरी जेल में भेजा जाएगा।"

इतने कामों के बीच भी बापू हर रोज सुबह एक घंटा सैर करने के लिए निकल ही जाते थे। वे जिनको अपना राजनैतिक गुरू मानते थे वे गोखलेजी, सैर करने नहीं जाते थे। उनका स्वास्थ्य कुछ वैसा ही रहता था। बापू अदब में रहकर इसके प्रति नाराजगी भी दिखाते थे।

वे जब आश्रम से सैर करने निकलते थे तब साथ में कई लोग जुड़ जाते थे। कोई खास बात करने के लिए समय चाहता तो बापू उसे मुलाकात के लिए तड़के सुबह सैर का समय भी दे देते थे। वे चलते जाते और बात भी करते जाते ।

लेकिन बापू पर सबसे पहला हक बच्चों का रहता था। बापू उनके साथ शरारतें भी करते थे।

एक बार एक शरारती बालक ने पूछाः "बापू, एक बात पूछूं?"

बापू ने हामी भरी। तब ज़रा आगे निकलकर उनकी ओर देखकर उसने पूछाः " " " अहिंसा का अर्थ यही है ना कि दूसरे को दुःख न देना?"

बालक ने गंभीरता से सवाल पूछा था।

बापू ने कहाः "सही है।"

बालक ने एकदम से उनको पकड़ लियाः " तब आप हंसते-हंसते जो हमारे गाल पर चिउंटी भर लेते हैं उसे, हिंसा कहेंगे या अहिंसा?"

बापू बोलेः " ठहर जा, शैतान कहीं का!" और उसे पकड़कर ज़ोर से चिउंटी भरी।

सारे बच्चे हंस - हंसकर तालियां बजाने लगेः " बापू को चिढ़ाया! बापू को चिढ़ाया!"

लेकिन इन सभी में सबसे ऊंची खिलखिलाती हंसी स्वयं बापू की थी!

बापूजी को सरकार ने एपेन्डिसाइटिस के ऑपरेशन के बाद अभी जेल से छोड़ा नहीं था।

उनके मित्र दीनबंधु एन्ड्रूज़ उनसे मिलने पूना आ पहुंचे थे। सवेरे साढ़े सात बजे एन्ड्रूज़ चाय पीए बगैर, बापू के पास सरकारी अस्पताल में जाकर बैठ गये।

उन्होंने हंसकर बापू से कहाः " देखिए, मैं कितना संयमी रहा हूं! आज चाय पीए बगैर ही आ गया।"

बापूः " क्यों?"

एन्ड्रूज़ः " आपके पास दो पल जल्दी आकर बैठने के लिए"।

बापू ने मधुरता से व्यंग्य किया। " यानि एक इच्छा का त्याग किया। लेकिन दूसरी इच्छा के कारण ही त्याग कर पाये हो ना?" और दोनों महानुभाव खिलखिलाकर हंस पड़े।

एक दिन प्रभावती बहन कूड़ेदान के कागज़ों के बीच कुछ ढूंढ रही थीं। कस्तूरबा ने उनको देखा। पास जाकर पूछाः " बहन, क्या कर रही हो?"

प्रभावतीः " बा, एक हरे रंग का छोटा सा कागज़ ढूंढ रही हूं।"

बाः " किस चीज़ का कागज है जो इतना ढूंढ रही हो? किसी लेख का है?"

प्रभावतीः " नहीं, आंखों पर प्रकाश न लगे इसलिए, लालटेन की बाती के आड़े रखने का छोटा हरा कागज है। बापू का है। लालटेन साफ करते समय मुझ से गिर गया। यहीं होना चाहिए, इसलिए ढूंढ रही हूं।"

बा गईं, सीधी बापू के पास। बापू के साथ लड़ने झगड़ने का, उनका अधिकार था। वह तो बापू पर बरस पड़ी। " क्यों इस बिचारी छोटी लड़की को परेशान कर रहे हो? कागज़ के एक छोटे से टुकड़े को कब से ढूंढ रही है!"

बापूः " छोटा टुकड़ा है, बात सही है। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि वह काम का नहीं रहा। वह अपनी जगह पर बहुत ही काम का था। उसे फेंकने की क्या जरूरत है? उसे ढूंढकर अपनी जगह पर रखना चाहिए। उसे ढूंढने दो। ठीक ही कर रही है।"

प्रभावती को कागज़ मिल गया। उसे ठीक जगह पर रखा गया। वातावरण में आनंद और बढ़ गया।

सफर के दौरान गांधीजी एक आश्रम-विद्यालय में गये थे। बारिश हो रही थी। सुबह बच्चे देर से आये। गांधीजी को कहीं और जाना था। बच्चों के साथ वे थोड़े ही मिनट बिता पाये।

गांधीजी ने बात शुरू की: " तुम सब कताई करते हो और खादी पहनते हो। लेकिन मुझे यह बताओ कि तुममें से कितने हमेशा सच बोलते हो, यानि कि कभी भी झूठ नहीं बोलते।"

कुछ बच्चों ने हाथ ऊपर उठाये।

गांधीजी ने दूसरा सवाल पूछा: " अच्छा, अब बताओ कि कभी-कभी झूठ बोलनेवाले कौन-कौन हैं?"

दो बच्चों ने फौरन हाथ ऊपर किया।

फिर तीन ने....

फिर चार ने....

फिर तो हाथ ही हाथ दिखने लगे। प्रायः सभी बच्चों ने हाथ ऊपर उठा लिये थे।

गांधीजी ने उनसे कहा: " जो बच्चे जानते हैं और कबूल करते हैं कि वे कभी-कभी झूठ बोलते हैं, उनके लिए हमेशा उम्मीद बनी रहेगी। जो मानते हैं कि वे कभी झूठ नहीं बोलते, उनका रास्ता कठिन है। मैं दोनों की सफलता चाहता हूं।"

फीनिक्स के स्कूल में बच्चों को निबंध लिखने के लिए कहा गया। विषय था: " पहला सत्याग्रही कौन?"

किसी ने कहा, थंबी नायडू पहला सत्याग्रही था। उसने दक्षिण अफ्रीका की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

दूसरे ने कहा, नहीं नहीं, पहले सत्याग्रही तो बापूजी स्वयं थे।

तब तीसरे ने नारायणस्वामी को पहला सत्याग्रही बताया, जिनका निर्वासन में देहांत हो गया था।

निबंध जांच कर लौटाये गये। " ठीक है", ऐसा प्रमाणपत्र भी मिला।

लेकिन बापू ने सभी को अनुत्तीर्ण ठहराया।

सभी के दिमाग चक्कर खा गये। आखिर पहला सत्याग्रही कौन हो सकता है?

बापू ने सब को बताया: " पहला सत्याग्रही थंबी नायडू नहीं, भक्त प्रह्लाद था।"

यानि बापू कोई नई बात नहीं कह रहे थे। केवल उन से पहले जो महान सत्याग्रही रहे थे, उन्हीं का अनुसरण कर रहे थे। बापू ज़िंदगी भर एक बात बड़े आग्रह के साथ कहते थे: " मुझे कोई नई बात नहीं कहनी है। सत्य और अहिंसा पर्वतों जितने पुराने हैं।" वास्तव में वे सत्य-अहिंसा को, मानव जीवन के आज के संदर्भ में आचरण में ढालकर दिखा रहे थे — जीकर दिखाते थे। उनकी यही अनोखी मौलिकता थी।

प्रभावतीः " बापूजी, आप शाम को टहलते समय हम सब के कंधों पर हाथ रखकर चलते थे। अब ऐसा क्यों नहीं करते?"

बापूः " देखो ना, कई लोग सोचते हैं कि मुझे लड़कियों के कंधों पर हाथ रखकर नहीं चलना चाहिए।"

प्रभावती और अन्य लोग इस बात को समझ नहीं पाए कि लोग, ऐसा क्यों सोचते होंगे?

तब बापू ने कहाः " मैं तो चला जाऊंगा, लेकिन तुम लड़कियां मेरे जीवन की साक्षी बनी रहोगी।"

सालों पहले कहे गये ये शब्द बापू के चले जाने के बाद प्रभावती बहन आज, दिल को छू जाने वाली भावुकता से याद करती हैं।

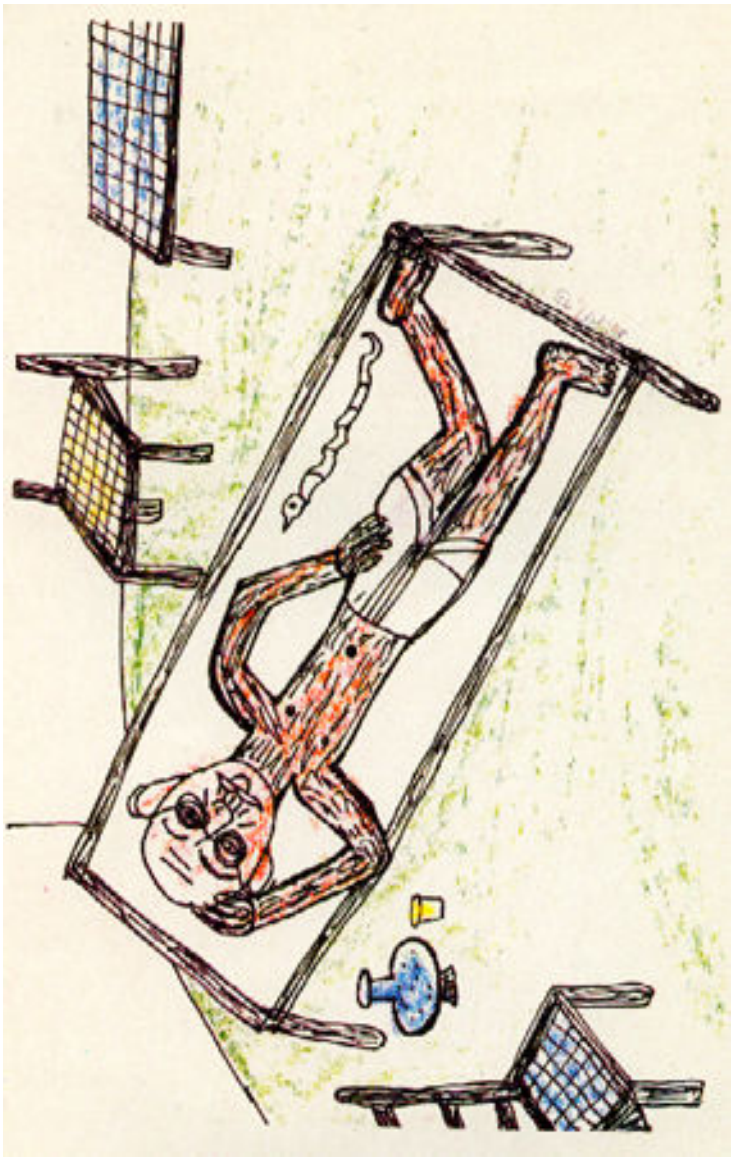

साबरमती आश्रम में शाम की प्रार्थना समाप्त हुई। साबरमती नदी का पानी किनारे से रगड़कर कल कल बह रहा है। आकाश में वसंत की पूनम का चांद खिला है।

प्रार्थना के बाद एक बिस्तर में तकिये पर दाहिना हाथ टिकाकर गांधीजी लेटे हैं। शरीर खुला है। कहीं ठंड न लग जाय, सोचकर बा उनको एक चद्दर की दो तह लगाकर ओढ़ाती हैं। आधी चद्दर पीठ के पीछे है।

सामने रावजीभाई बैठे हैं। बात करते करते रावजीभाई की नजर पीठ को ढंक रही सफेद चद्दर की काली छाप पर पड़ती है। अरे, काला सांप! सांप चद्दर के ऊपर से गांधीजी की पीठ पर चढ़कर दूसरी ओर उतरने के लिए गर्दन आगे करता है।

रावजीभाई का ध्यान बात में नहीं है यह देखकर और खुद भी कुछ महसूस करके गांधीजी पूछते हैं: " क्या बात है?"

रावजीभाई की सांस ऊपर की ऊपर रह गई। गांधीजी अगर हिलेंगे तो सांप डंस जाएगा। यदि घबराकर कुछ कहेंगे तो वहां बैठे सारे चौंक जाएंगे। वे धीरे से बोले: " कुछ नहीं। एक सांप है।"

सुनकर बा इत्यादि चिंता से खड़े हो गये, लेकिन गांधीजी और रावजीभाई स्थिर हैं। सांप आगे बढ़ नहीं रहा, लेकिन चांदनी में कहीं जाता हुआ भी दिखाई नहीं दिया। कहीं पीठ और चद्दर के बीच में तो नहीं छुप गया? रावजीभाई ने धीरे से कहा: " बाबूजी, आप बिलकुल नहीं हिलना।"

" मैं नहीं हिलूंगा। लेकिन आप संभल के रहना।"

रावजीभाई चद्दर उठाते हैं। काफी वज़न है। चद्दर को ताकत लगाकर दूर फेंक देते हैं। चद्दर में से सांप बाहर आता है। रावजीभाई और दूसरे लोग उसे पकड़ते हैं और दूर फेंक आते हैं।

अखबार में खबर छपी: " महात्माजी के मस्तक पर नाग का फन"। एक लोक मान्यता ऐसी है कि नाग जिस मानव के मस्तक पर फन फैलाता है वह, चक्रवर्ती बन जाता है। कुछ लोगों ने ऐसा भी कहा कि नाग ने गांधीजी की पीठ पर फन फैलाया इसलिए, वे देश के नेता बने रहे, यदि मस्तक पर फैलाया होता तो पूरी दुनिया के नेता बन जाते। ये सब चमत्कार की बातें किंवदंतियां बन गईं। लेकिन गांधीजी और नाग की घटना में सबसे बड़ा चमत्कार तो यह था कि वे पूरे धीरज के साथ, शांत मन से, एक रोंगटा तक हिलाये बिना जिस स्थिति में थे, वैसे के वैसे लेटे रहे।

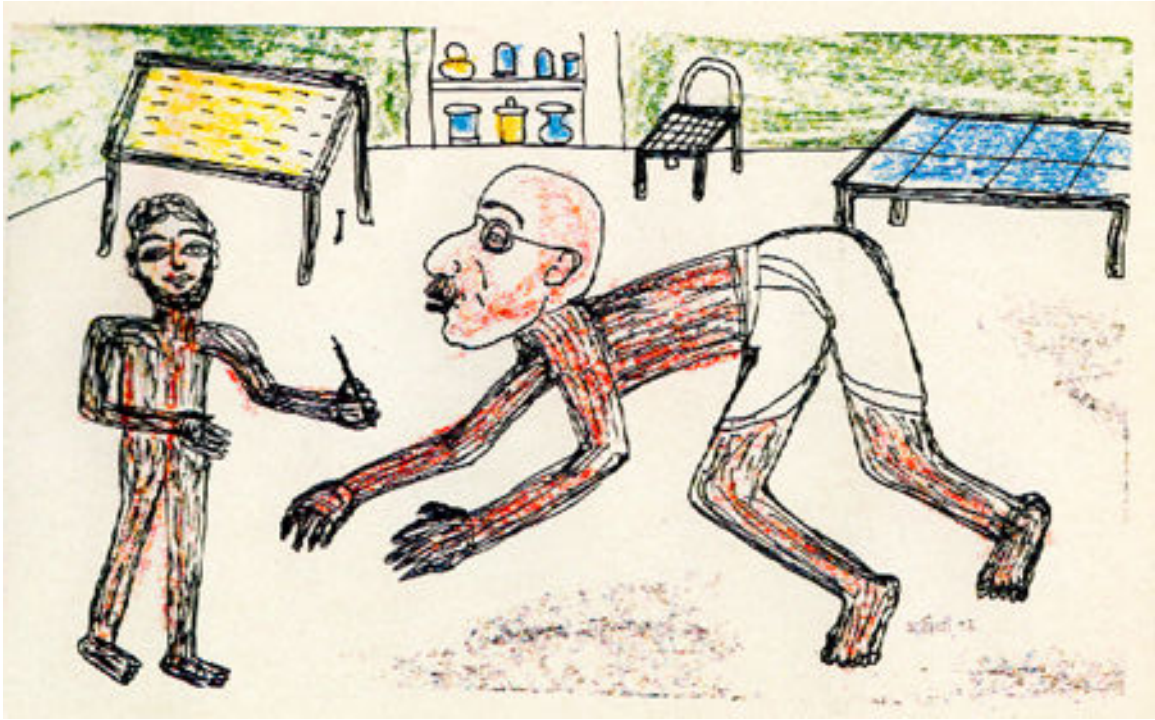

गांधीजी अफ्रीका से हाल ही में लौटे थे। बंबई में महासभा हुई थी। काका साहब कालेलकर गांधीजी के निवास पर जाकर उनके काम में मदद कर रहे थे।

एक बार गांधीजी टेबल के आस-पास कुछ ढूंढ रहे थे। काका साहब ने पूछाः " क्या ढूंढ रहे हैं?"

" मेरी पेन्सिल। छोटी-सी है।"

उनका समय और तकलीफ बचाने के लिए काका साहब अपनी जेब से पेन्सिल निकालकर देने लगे।

" नहीं, नहीं, मुझे तो मेरी वह छोटी पेन्सिल ही चाहिए।"

काका साहब ने बिनती करते हुए कहाः " आप यह पेन्सिल लीजिए। आपकी पेन्सिल मैं ढूंढता हूं। बेकार में आप का समय बर्बाद हो रहा है।"

बापूः " वह छोटी पेन्सिल मैं खो नहीं सकता। क्या आप जानते हैं वह पेन्सिल मुझे मद्रास में नटेसन के छोटे बेटे ने दी थी। कितने प्यार से वह पेन्सिल लाया था! मैं उसे कैसे खो सकता हूं?"

फिर दोनों ने मिलकर उसे ढूंढा। आखिर वह मिली। दो इंच से भी छोटा टुकड़ा था।

लेकिन उसके पीछे उस नन्हे बालक का उत्साह था। महात्मा के हृदय ने उसे कितने आदर के साथ संभाला था!

नन्हा मोहन स्कूल के बाद सीधा घर की ओर भागता था। आस-पास कुछ देखता ही नहीं था। वह सोचता, " कोई मेरा मज़ाक उड़ायेगा तो?" स्कूल खुलते ही पहुंच जाना, खतम होते ही घर लौट आना — यही था उसका रोज का क्रम। स्वभाव से बहुत ही शर्मीला। काम से काम। न कोई दोस्त। न किसी से बात-चीत।

शिक्षक के प्रति आदरभाव रखता था। शिक्षक को धोखा देने का तो सवाल ही नहीं था।

हाईस्कूल में परीक्षा चल रही थी। इन्स्पेक्टर जाइल्स स्कूल की जांच करने आये थे। उन्होंने विद्यार्थियों से अंग्रेजी के पांच शब्द लिखवाये। मोहन ने Kettle (केटल) शब्द की वर्तनी गलत लिखी। शिक्षक ने जूते की नोक से ठेल कर उसे सावधान किया। लेकिन वह कहां सचेत होने वाला था? वह इस बात को मानने के लिए तैयार ही नहीं था कि शिक्षक उसे, दूसरे विद्यार्थियों की स्लेट में देखकर वर्तनी ठीक करने को कह सकते हैं। उसे लगा कि विद्यार्थी एक दूसरे की स्लेट से नकल न करें यह देखने के लिए ही शिक्षक चक्कर काट रहे थे।

सभी विद्यार्थियों के पांचों शब्द सही निकले। अपने मोहनजी अकेले बुद्धू साबित हुए।

बाद में शिक्षक ने मोहन को उसकी 'मूर्खता' के बारे में समझाया। लेकिन वह लिखता है: " मेरे दिमाग पर उनके समझाने का कोई असर नहीं पड़ा। दूसरे लड़कों से चोरी करना मुझे कभी नहीं आया।"

गांधीजी सवेरे जल्दी उठ जाते थे। उठकर मुंह धोना और दांत मांजना। इसके लिए पानी की छोटी लोटी और पीकदानी बिस्तर के पास ही रहती थी। उसी से काम निपटा लेते थे।

मोहनलाल पंड्या ने कहा: " बापू, पानी की कमी है क्या? यहां साबरमती बह रही है। पानी की इतनी किफायत क्यों कर रहे हैं?"

गांधीजी ने उलटा सवाल किया: " मेरा चेहरा आप को ठीक से साफ किया दिख रहा है या नहीं?"

पंड्याजी बोले: " हां, सो तो है!"

गांधीजी: " तो फिर दिक्कत क्या है? आप कई लोटे भर-भर कर पानी का प्रयोग करते हैं, लेकिन गीले हाथों से चेहरे पर पानी लगाते हैं। मैं पानी से चेहरा साफ करता हूं। इतना पानी काफी है।"

पंड्याजी: " लेकिन नदी में कितना सारा पानी है, और....."

गांधीजी: " नदी का पानी किसके लिए है? क्या मेरे अकेले के लिए है?"

पंड्याजी: " सभी के लिए है। आपके लिए भी है...."

गांधीजी: " ठीक कहा। नदी का पानी पशु, पक्षी, जीव-जंतु सभी के लिए है। केवल मेरे अकेले के लिए नहीं। मैं अपने ज़रूरत का पानी ले ही लेता हूं। लेकिन उससे
अधिक लेने का मुझे हक नहीं है। साझी मिल्कियत में से हम ज़रूरत से ज्यादा कैसे ले सकते हैं?

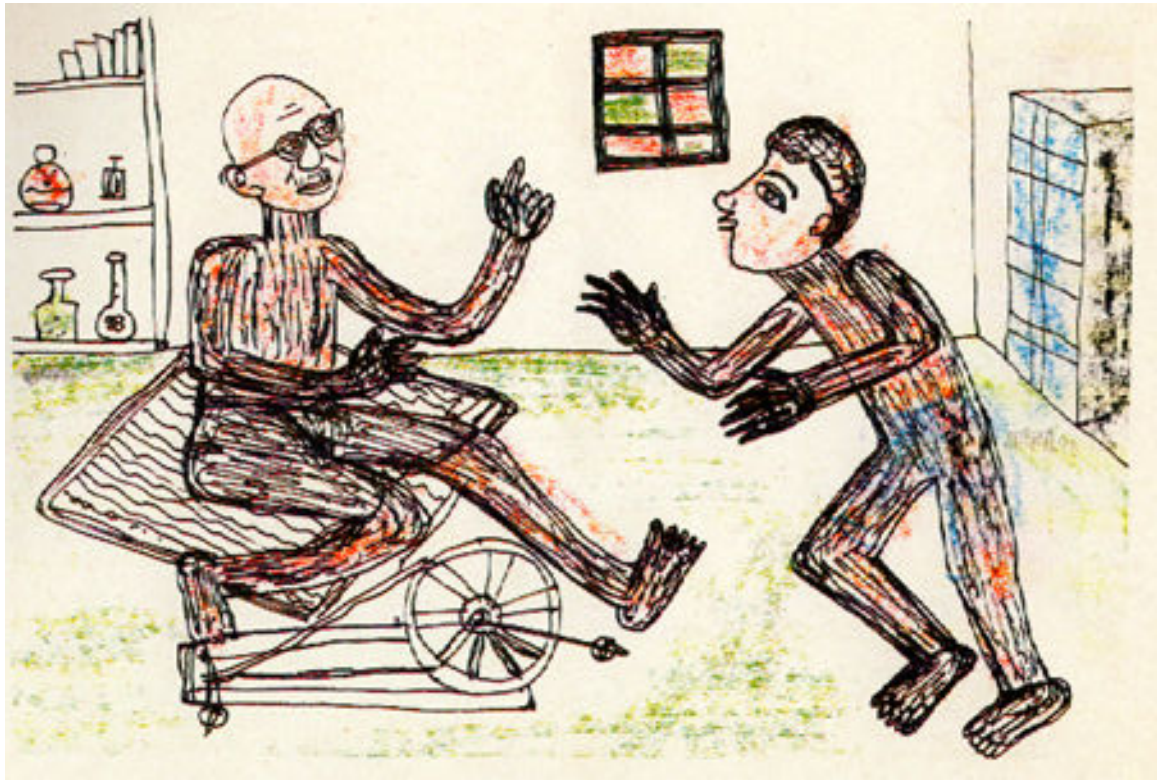

एक युवक की बापू से रूबरू मिलने की बड़ी इच्छा थी। उसने पत्र लिखा और मुलाकात के लिए समय मांगा।

बापू ने जवाब दिया, " आप इतनी दूर से यहां सेवाग्राम में मिलने आएंगे। इतना सारा खर्च करने की क्या जरूरत है?"

युवक समझदार था। उसने बापू की बात मान ली। मिलने की इच्छा पर काबू पाया।

कुछ समय बीतने के बाद युवक ने लिखा कि उसे किसी काम से कलकत्ता जाना है। यदि मुलाकात का समय मिल जाय तो वह बीच में वर्धा स्टेशन पर उतरकर, थोड़ी देर के लिए सेवाग्राम हो आना चाहता है।

बापू का पत्र तुरंत आ गया। अपने कई कामों के बीच उन्होंने, उस युवक को मुलाकात के लिए बारह बजे, एक मिनट का समय दिया।

निश्चत समय पर वह युवक सेवाग्राम में बापू की कुटिया में दाखिल हुआ। मुलाकात शुरू हुई।

बापूजीः " कताई करते हो?"

युवकः " जी नहीं।"

बापूजीः " तो करो।"

युवक कुतूहलवश गया था ना! यह उसकी सहृदयता की कसौटी थी। या फिर उसकी चेतना कोई आकार लेने की कोशिश कर रही थी और बापू की ओर मुड़ी थी? बापू ने उसे रास्ता दिखाया। उस की उन्मुख चेतना शब्दों के छोटे से मंत्र से, जीवनधर्म की मोहर लगा दी।

युवक उन तीन सहज शब्दों का गहरा मर्म समझने की कोशिश में डूब गया। तब बापू के प्यार भरे शब्द सुनाई दियेः " आपका एक मिनट समाप्त हो चुका है।"

लेकिन यह कैसा मिनट!

राम राम

बालक मोहन अंधेरे में अकेला जाने से डरता था। उस का दिल फड़फड़ाने लगता था। उस नन्हे बालक को लगता था कि दांई ओर से भूत आ जायेगा और बांई ओर से प्रेत।

एक बार अंधेरे में अकेले जाना था। लेकिन मोहन क्यों जाता? नन्हा मोहन तो डरने में शूरवीर था। पास ही घर की दाई रंभा खड़ी थी। उसने धीरे से कहाः
" डरते क्यों हो? अंधेरा हो या और कुछ भी हो, हम अगर राम का नाम लेते हुए चलते रहें तो कोई बाल भी बांका नहीं कर पाएगा। मोहन फौरन आगे बढ़ा। उसकी ज़बान पर ही नहीं, दिल में भी राम के नाम की रट थी।

उस दिन से मोहन निडर होकर चारों ओर घूमने लगा। जिसे राम का साथ हो उसे भला डर किस बात का?

रामनाम के उच्चारण से मोहन इतना निडर बन गया कि उसने चालीस करोड़ हिंदवासियों को — मानव मात्र, को निडरता से जीने की राह दिखा दी।

अंतिम क्षण में भी ज़बान पर एक ही शब्द था — राम।

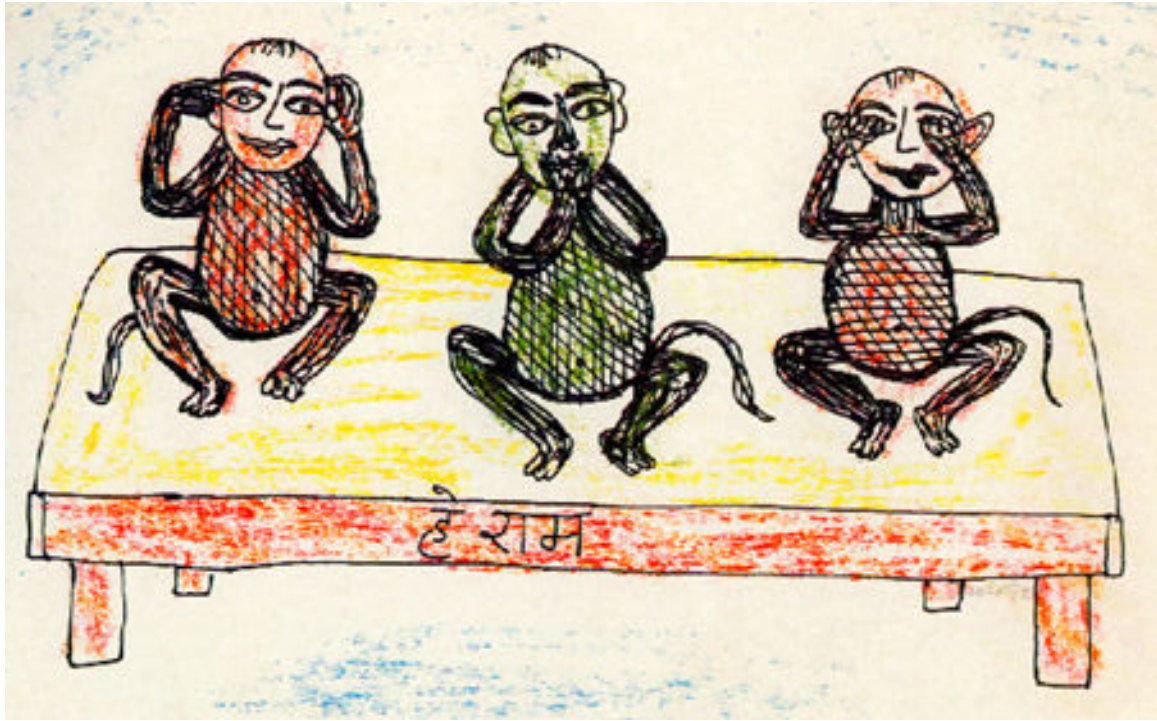
हे राम